

हिंदी (युवकभारती)

वेळ : ३ घण्टे)

प्रश्नपत्रिका : सप्टेंबर २००९

(कुल अंक : ८०)

- प्र. १. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर २०० ते २५० शब्दों में निबंध लिखिए । (१०)
- (१) वर्तमान जीवन में बिजली का महत्त्व (२) भ्रष्टाचार - एक शिष्टाचार
(३) फूल की आत्मकथा (४) यदि मैं शिक्षामंत्री होता... (५) मन के हारे, हार है
- प्र. २. निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी एक प्रश्न का उत्तर लगभग १०० शब्दों में लिखिए । (६)
- (१) लोगों ने प्रोफेसर आनंद की पिटाई क्यों की?
(२) वसुधा और मुन्नी के बचपन की जीवनचर्या का अंतर स्पष्ट कीजिए ।
(३) सरदार शिवसिंह के चरित्र का चित्रण कीजिए ।
- प्र. ३. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग ६० शब्दों में लिखिए । (८)
- (१) सेठ परसादीलाल ऊँचें दामों पर चावल क्यों खरीद रहे थे?
(२) लेखिका अमृता प्रीतम के जीवन में 'राज' आणि 'राजन' का क्या महत्त्व है?
(३) सभा समाप्त होने पर आदर्श कुक्कट-गृह की क्या दशा हुई?
(४) गाँव के पुराने शिवालय का परिचय दीजिए ।
- प्र. ४. निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी एक प्रश्न का उत्तर लगभग ८० शब्दों में लिखिए । (५)
- (१) कवि मैथिलीशरण गुप्त सांप्रदायिक भेद को एकता में बाधक क्यों नहीं मानते ?
(२) रहीम ने बैर, प्रीति, अभ्यास और यश के बारे में क्या कहा है?
(३) 'विनम्रता ताकतवर की मुद्रा है', ऐसा कवि राजेश जोशी क्यों कहते हैं?
- प्र. ५. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखिए । प्रत्येक उत्तर लगभग ५० शब्दों में हो । (९)
- (१) 'भोर हो गई' कविता में कवि ने भोर की सुंदरता का वर्णन किस प्रकार किया है?
(२) बगीचे में बसंत ऋतु कैसे छाई है?
(३) मीराँ ने गिरिधर गोपाल का वर्णन किन शब्दों में किया है?
(४) काँटे फूलों की रक्षा किस प्रकार करते हैं?
(५) लडकी के मतानुसार चाँद को कौन-सी बीमारी है?
- प्र. ६. (च) निम्नलिखित अवतरण का संदर्भसहित स्पष्टीकरण कीजिए । (४)
- मैं छाते को मनुष्य-जाति का एक बहुत बड़ा उपकारकर्ता समझता हूँ । अथवा
"हिम्मत तो करनी पड़ेगी भई ! वाहेगुरू मोढ़ों (कंधों) पर बिठाकर तो नहीं ले जाएगा न ।"
- (छ) निम्नलिखित पद्यांश का संदर्भसहित स्पष्टीकरण कीजिए । (४)
- चरन-कमल बंद्री हरि-राइ ।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अंधे को सब कुछ दरसाइ ।
बहिरी सुनै, गूंग पुनि बोलै, रंक चलै सिर छत्र धराइ ॥ अथवा
प्रार्थी आज निखिल मानवता,
उठे मृत्यु से वह ऊपर,
स्वर्ण शांति में ऐक्य मुक्ति का,
भू पर स्वर्ग उठे शोभन !
- (ज) निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक 'एक' वाक्य में लिखिए । (४)
- (१) टैक्सी में कुल कितनी सवारियाँ थीं?
(२) नागफनी के फूल किसके लिए वरदान है?
(३) गाँव के पुराने शिवालय-में श्रद्धालू क्यों नहीं आते थे?
(४) दूसरे नंबर के बेटे का चूल्हा चाची ने क्यों अलग कर दिया?
(५) मनुष्य की दीनता की चरम सीमा क्या है ?

प्र. ७. (क) निम्नलिखित में से किसी एक प्रश्न का उत्तर लगभग ६० शब्दों में लिखिए । (७)

- (१) घीसा में स्वच्छता के प्रति कैसे आस्था पैदा हुई?
(२) 'भगवान औघडदानी है' ऐसा खितीन बाबू क्यों कहते हैं?
(३) रामदास लेखक के गाँव में कैसे आया?

(ख) निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए । प्रत्येक उत्तर लगभग ५० शब्दों में हो । (६)

- (१) राष्ट्रभाषा के संबंध में महादेवी जी के विचार । (२) 'चंद्रगुप्त' नाटक में बालक वर्मा का अभिनय ।
(३) कवि रवींद्रनाथ ठाकुर की अंतिम कविता । (४) साँप-प्रसंग और दब का साहस ।

प्र. ८. (अ) निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों के रचना के अनुसार भेद पहचानकर लिखिए । (२)

- (१) इंजीनियरों का ठेकेदारों से कुछ ऐसा ही संबंध है, जैसे मधु-मक्खियों का फूलों से ।
(२) बादल का टुकड़ा नीचा हो गया है और स्वर्ण रेखा ठीक शिखर पर आ लगी है ।
(३) नीना मेरे एक उपन्यास की पात्र है ।

(आ) कोष्ठक की सूचना के अनुसार किन्हीं दो वाक्यों का काल-परिवर्तन करके वाक्य फिर से लिखिए । (२)

- (१) बेचारे अन्न के दान को तरस कर मरते हैं । (सामान्य भूतकाल में लिखिए)
(२) नागफनी के मस्तक पर सजा पुष्प मैंने देखा था । (अपूर्ण वर्तमान काल में लिखिए ।)
(३) वह लड़की जात, कहाँ जाती है । (सामान्य भविष्यत् काल में लिखिए ।)

(इ) निम्नलिखित में से किन्हीं दो मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए । (२)

- (१) पाप मिटाना । (२) आलोचना करना । (३) डट जाना ।

(ई) (i) निम्नलिखित में से किसी एक शब्द का विशेषण रूप लिखिए । (१)

- (१) इतिहास (२) सच्चा ।

(ii) निम्नलिखित में से किसी एक शब्द का भाववाचक संज्ञा-रूप लिखिए । (१)

- (१) तंत्र (२) बच्चा ।

(उ) निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध कर फिर से लिखिए । (२)

- (१) आगे वाले मुसाफिर ने ड्राइवर को कंधों पर हाथ रखते हुए बोला ।
(२) ओह ! धूप कहीं चला गई ।
(३) बस में एक यात्री का चक्कर आ गई ।

प्र. ९. निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर उस पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिखिए । (५)

दुनिया की हर एक चीज हमको शिक्षा देती है । एक दिन मैं धूप में घूम रहा था । चारों तरफ बड़े-बड़े हरे वृक्ष दिखाई देते थे । मैं सोचने लगा, कि ऊपर से इतनी कड़ी धूप पड़ रही है, फिर भी ये वृक्ष हरे कैसे हैं? वे वृक्ष मेरे गुरू बन गए । मेरी समझ में आ गया कि जो वृक्ष ऊपर से इतने हरे-भरे दिखते हैं; उनकी जड़े जमीन में गहरी पहुँची हैं और वहाँ से उन्हें पानी मिल रहा है । इस तरह अंदर से पानी और ऊपर से धूप, दोनों की कृपा से यह सुंदर हरा रंग उन्हें मिला है । इसी तरह हमें अंदर से भक्ति का पानी और बाहर से तपश्चर्या की धूप मिले, तो हम भी पेड़ों जैसे हरे-भरे हो जाएँ । हम ज्ञान की दृष्टि से परिश्रम को नहीं देखते, इसलिए उसमें तकलीफ मालूम होती है । ऐसे लोगों को आरोग्य और ज्ञान कभी मिलने ही वाला नहीं ।

प्रश्न : (१) हरे-भरे वृक्ष से हमें क्या सीख मिलती है? (२)

(२) वृक्ष हरे-भरे कैसे बनते हैं? (२)

(३) उपर्युक्त गद्य परिच्छेद को उचित शीर्षक दीजिए । (१)

अथवा

उपर्युक्त परिच्छेद का एक तिहाई (१/३) शब्दों में सार लिखिए तथा उचित शीर्षक दीजिए ।

प्र. १०. निम्नलिखित पत्र का प्रारूप तैयार कीजिए । (५)

मोहन जोशी / मोहिनी जोशी, २१ आदित्य नगर, अकोला से, आदर्श कनिष्ठ महाविद्यालय के प्राचार्य को छात्रवृत्ति पाने हेतु प्रार्थना-पत्र लिखता/लिखती है ।

अथवा

नरेश गुप्ता / नलिनी गुप्ता, नौपाडा, ठाणे - ४००६०२ से अध्यक्ष, नागरी सहकारी बैंक लि. को लोकमान्य तिलक मार्ग, ठाणे - ४००६११ शाखा के असिस्टेंट मॅनेजर पद हेतु आवेदन-पत्र लिखता/लिखती है ।